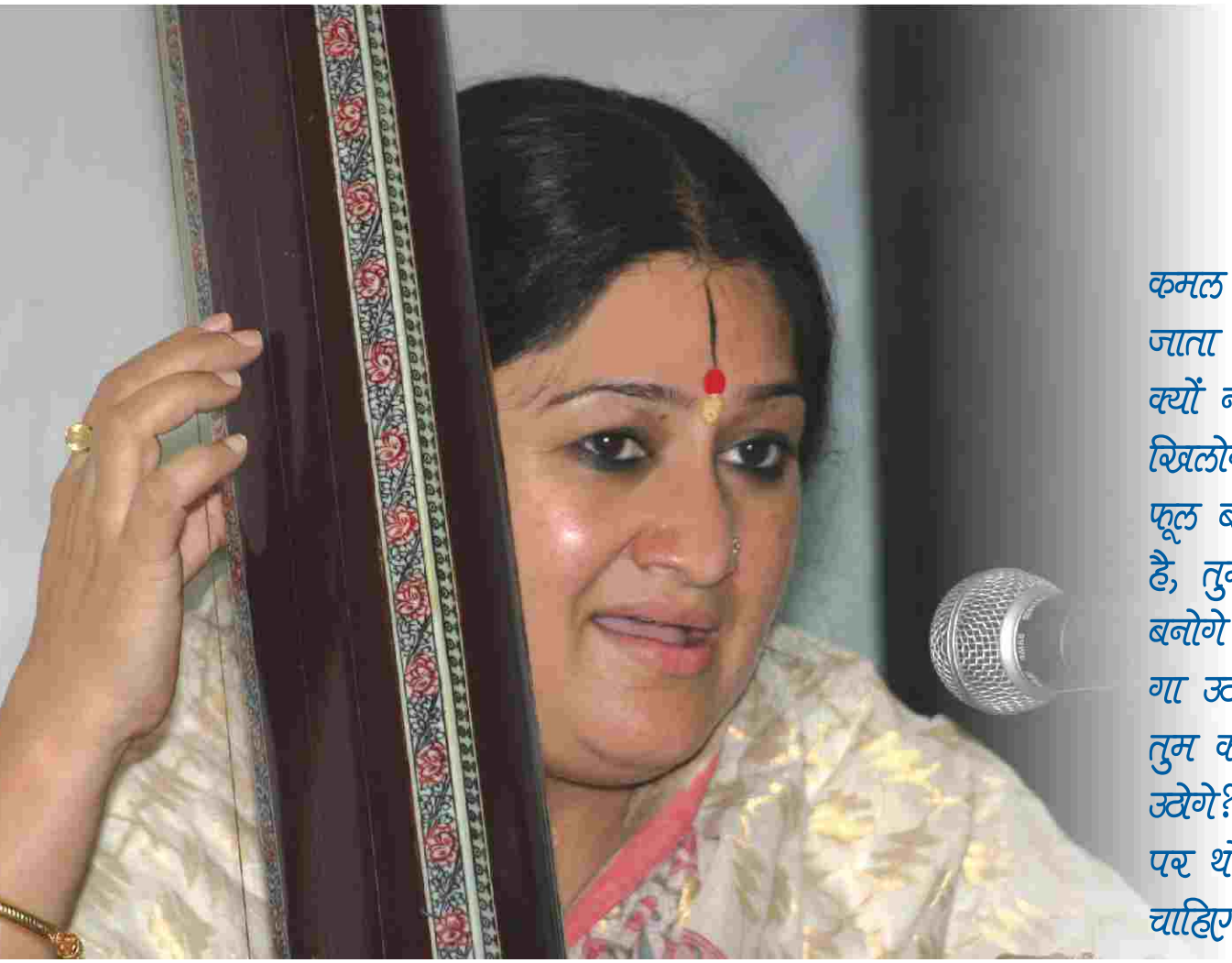

कमल खिल जाता है, तुम क्यों न खिलोगे? कली फूल बन जाती है, तुम क्यों न बनोगे? पक्षी गा उठते हैं, तुम क्यों न गा उठोगे? अपने पर थोड़ी श्रद्धा चाहिए

नए-नए गीत गाओ

भजन उसका, जिससे अभी मिलन नहीं हुआ, जिससे अभी पहचान नहीं हुई। उसकी पुकार! पुकारो! पुकारो, तो एक दिन जरूर यह अस्तित्व उत्तर देता है। यह अस्तित्व बहरा नहीं है। यह अस्तित्व संवेदनशील है। लेकिन तुम्हारी पुकार हार्दिक होनी चाहिए। तुम पुकारते हो और कोई नहीं सुनता—उसका सिर्फ इतना ही अर्थ है कि तुम्हारी पुकार के पीछे तुम्हारा हृदय नहीं धड़कता था। और कुछ अर्थ नहीं है। इससे यह मत सोच लेना कि वहां कोई उत्तर देने वाला नहीं है। उत्तर तो दिया जाएगा, लेकिन अभी तुम उत्तर के योग्य नहीं। अभी तुमने प्रश्न भी ठीक से नहीं पूछा, तुम्हारा प्रश्न भी उधार है, तुम्हारा प्रश्न भी अपना नहीं है, तुम्हारे प्रश्न में भी प्राण नहीं हैं, तुम्हारा प्रश्न कचरा है। कचरा प्रश्नों के उत्तर नहीं आते अस्तित्व से।

लेकिन जब भी तुम ऐसा कोई प्रश्न पूछोगे, जिस पर तुम अपने जीवन को लगाने को तैयार हो; जब तुम कोई ऐसा प्रश्न पूछोगे, ऐसी पुकार करोगे कि तुम उस पर सब निछावर करने की तैयारी रखते हो, तुम कीमत चुकाने के लिए राजी हो, तुम मुफ्त उत्तर नहीं पाना चाहते और जो भी मांगा जाएगा, जो भी शर्त होगी, पूरी करोगे—चाहे जीवन ही क्यों न देना पड़े—उसी दिन तुम उत्तर पाओगे। उसी दिन तुम पाओगे, सारा अस्तित्व जो कल तक बहरा मालूम पड़ता था, बहरा नहीं है। वृक्ष बोलने लगे, तारे बोलने लगे, पत्थर-पहाड़ बोलने लगे। अचानक तुम पाओगे, तुम एक दूसरे जगत में प्रवेश कर गए, एक संवेदनशील जगत का जन्म हुआ। कुछ भी नहीं हुआ, जगत वही का वही है, सिर्फ तुम्हारी संवेदना जग गई; तुम्हारी संवेदना के स्रोत खुल गए; तुम्हारा हृदय अनुभव करने लगा।

मेरी तो हर सांस मुखर है,
प्रिय, तेरे सब मौन संदेशे
एक लहर उठ-उठ कर फिर-फिर
ललक-ललक तट तक जाती है,
किंतु उदासीना युग-युग से
भाव-भरी तट की छाती है,
भाव-भरी यह चाहे तट भी
कभी बढ़े, तो अनुचित क्या है?
मेरी तो हर सांस मुखर है,
प्रिय, तेरे सब मौन संदेशे

भक्त ऐसा अनुभव करेगा।

मेरी तो हर सांस मुखर है...

पुकारेगा, आवाज देगा, और वहां से कोई उत्तर न पाएगा।

मेरी तो हर सांस मुखर है,
प्रिय, तेरे सब मौन संदेशे
एक लहर उठ-उठ कर फिर-फिर
ललक-ललक तट तक जाती है,
किंतु उदासीना युग-युग से
भाव-भरी तट की छाती है,

तुम्हारी छाती उदासीन है। लहर आती भी है उस तरफ से, तो तुम पकड़ नहीं पाते। तुम्हारी आंखें अंधी है। उस तरफ से हाथ बढ़ता भी है आशीर्वाद बरसाने को, तो तुम देख नहीं पाते। तुम कुछ का कुछ देख लेते हो। तुम कुछ का कुछ समझ लेते हो। तुम्हारी समझ ही बाधा बन रही है। तुम नासमझ हो जाओ, तुम अपनी सारी समझ छोड़ दो, तो शायद समझ भी जाओ। लेकिन तुम्हारा पांडित्य, तुम्हारा ज्ञान, तुम्हारी व्याख्याएं, तुम्हारी टीकाएं, तुम्हारे शास्त्र; तुमने जो सीखा, पढ़ा, गुना है—वह सब बीच में बाधा बन जाता है। उस सबको पार करके प्रभु की आवाज तुम तब नहीं पहुंच पाती।

मेरी तो हर सांस मुखर है,
प्रिय, तेरे सब मौन संदेशे

परमात्मा मौन नहीं है, परमात्मा प्रतिपल बोल रहा है। उसके बोलने के ढंग और हैं। कभी-कभी मौन से भी बोलता है, मौन उसकी भाषा है। लेकिन बोलता है, निश्चित बोलता है।

बंद कपाटों पर जा-जा कर
जो फिर-फिर सांकल खटकाए,
और न उतर पाए, उसकी
लाज-व्यथा को कौन बताए,
पर अपमान पिए पग फिर भी
उस ड्योढ़ी पर जाकर ठहरें,
क्या तुझमें ऐसा जो तुझसे मेरे तन-मन-प्राण बंधे से
मेरी तो हर सांस मुखर है, प्रिय, तेरे सब मौन संदेशे

फिर भी भक्त पुकारता रहता है। हारता है और पुकारता है। जल्दी सफलता नहीं मिलती है। इसलिए जो जल्दबाजी में हैं वे परमात्मा से वंचित रह जाते हैं। यह हमारी सदी अगर परमात्मा से वंचित है तो उसका और कोई कारण नहीं है; न तो पाप बढ़ा है, न लोग भ्रष्ट हुए हैं, न नास्तिकता फैल गई है। अगर कोई एक चीज बढ़ी है तो वह जल्दबाजी बढ़ी है। आदमी तत्क्षण चाहता है। प्रतीक्षा की क्षमता चुक गई है। घड़ी भर भी राह देखने को कोई तैयार नहीं।

बंद कपाटों पर जा-जा कर
जो फिर-फिर सांकल खटकाए,
और न उतर पाए, उसकी
लाज-व्यथा को कौन बताए,

बहुत बार होगा। सांकल खटखटाओगे, कोई उत्तर न आएगा। बार-बार लौट आओगे—थके, उदास, हारे, पराजित। प्रतीक्षा चाहिए ही। जब हारे लौट आओ, तो ऐसा मत सोचना कि परमात्मा नहीं है; और ऐसा भी मत सोचना कि परमात्मा कठोर है; और ऐसा भी मत सोचना कि परमात्मा संवेदनशून्य है। इतना ही जानना कि अभी मेरी पुकार पूरी नहीं; अभी मेरी प्यास अधूरी है। अभी मैंने द्वार तो खटखटाया था, लेकिन पूरे प्राण खटखटाने में संयुक्त न हुए थे। ऐसे डरते-डरते खटखटाया था। सोचा था, शायद हो—इस तरह खटकाया था। श्रद्धा पूरी न थी। मेरे संदेह ही बाधा बन गए।

जाहिर और अजाहिर दोनों
विधि मैंने तुझको आराधा,
रात चढ़ाए आंसू, दिन में
राग रिझाने को स्वर साधा,
मेरे उर में चुभती प्रतिध्वनि
आ मेरी ही तीर सरीखी
पीर बनी थी गीत कभी,
अब गीत हृदय के पीर बने से
मेरी तो हर सांस मुखर है,
प्रिय, तेरे सब मौन संदेशे

प्रारंभ में ऐसा होगा। लगेगा तुम किसी पत्थर से बातें कर रहे हो। मगर अगर बातें करते ही रहे, तो पत्थर पिघले हैं, तुम्हारे लिए भी पिघलेंगे।

थकना मत, चोट किए जाना। किसी को भी पता नहीं है,

थोड़ा आत्म-सम्मान सम्हालो। तुम फूलों से गए-बीते नहीं हो। कौन कमल तुमसे ज्यादा मूल्यवान है? तुम सहस्रार हो, तुम्हारे भीतर सहस्रदल कमल है। तुम्हारी झील में जो कमल खिल रहा है, वैसा किसी झील में न कभी खिला है, न खिल सकता है। झीलों के कमल साधारण है। तुम्हारे भीतर चेतना का कमल खिलने को तत्पर बैठा है

जीवंत चारों तरफ मौजूद है, तुम कहां जा रहे? किस मस्जिद में? किस मूर्ति की तलाश कर रहे हो? परमात्मा तुम्हारे घर आया हुआ है और तुम मंदिर जा रहे हो? परमात्मा तुम्हारे बेटे में मौजूद है, तुम्हारी मां में, तुम्हारे पिता में

है, किस चोट पर द्वार खुल जाएगा। द्वार खुलता है, इतना पक्का है। औरों के लिए खुला है, तुम्हारे लिए भी खुलेगा। मगर किस चोट पर खुलता है, कोई भी नहीं कह सकता। कितनी प्रार्थनाएं संयुक्त हो जाती हैं तब हृदय इस योग्य होता है, कोई भी नहीं कह सकता। फिर प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग है। पुकारो! नये-नये रास्ते खोजो पुकारने के। शब्द से पुकारो, मौन से पुकारो; आंसुओं से पुकारो, नृत्य से पुकारो, नये-नये मार्ग खोजो पुकारने के। एक हारे तो दूसरा तलाशो। थको मत! हारो मत! जीत सुनिश्चित है। देर हो सकती है, अंधेर नहीं है।

क्या गाऊं जो मैं तेरे मन को भा जाऊं

नये-नये गीत गाओ। एक गीत सफल न हो, दूसरा गीत गाओ। एक द्वार न खुले, दूसरा द्वार खटखटाओ। उसके द्वार अनंत हैं।

क्या गाऊं जो मैं तेरे मन को भा जाऊं
प्राची के वातायन पर चढ़
प्रात किरण ने गाया,
लहर-लहर ने ली अंगड़ाई
बंद कमल खिल आया,
मेरी मुस्कानों से मेरा
मुख न हुआ उजियाला
आशा के मैं क्या तुझको राग सुनाऊं
क्या गाऊं जो मैं तेरे मन को भा जाऊं

कमल खिल जाता है, तुम क्यों न खिलोगे? कली फूल बन जाती है, तुम क्यों न बनोगे? पक्षी गा उठते हैं, तुम क्यों न गा उठोगे? अपने पर थोड़ी श्रद्धा चाहिए।

और बड़ी हानि हुई है कि जिनसे तुमने सोचा था तुम्हें श्रद्धा मिलेगी, उनसे सिर्फ तुम्हें स्वयं के प्रति अपमान मिला है। तुम्हारे धर्मगुरु, तुम्हारे पंडित-पुरोहित, तुम्हारे तथाकथित साधु-संत अगर कोई एक बात तुम्हें पकड़ा दिए है, तो वह तुम्हारे प्रति निंदा का भाव है। तुम्हें उन्होंने गर्हित घोषित कर दिया है। तुम अपात्र हो, पापी हो और तुम सदा ऐसे ही रहने वाले हो—ऐसी धारणा तुम्हारे चित्त में बिठा दी है। उन्होंने तुम्हें इतना क्षुद्र कर दिया है कि तुम अब विराट की तरफ आंखें उठाने में समर्थ नहीं रह गए। तुम आंखें झुकाए जमीन में गड़े-गड़े चल रहे हो।

प्राची के वातायन पर चढ़
प्रात किरण ने गाया,
लहर-लहर ने ली अंगड़ाई
बंद कमल खिल आया,

तुम भी खिलोगे। सुबह की किरण तुम्हें भी जगा सकती है। लेकिन थोड़ा आत्म-सम्मान सम्हालो। तुम फूलों से गए-बीते नहीं हो। कौन कमल तुमसे ज्यादा मूल्यवान है? तुम सहस्रार हो, तुम्हारे भीतर सहस्रदल कमल है। तुम्हारी झील में जो कमल खिल रहा है, वैसा किसी झील में न कभी खिला है, न खिल सकता है। झीलों के कमल साधारण है। तुम्हारे भीतर चेतना का कमल खिलने को तत्पर बैठा है।

लेकिन अगर एक मार्ग से हार जाओ तो हताश मत हो जाना।

पकी बाल, बिकसे सुमनो
से लिपटी शबनम सोती,

धरती का यह गीत, निछावर
जिस पर हीरा-मोती
सरस बनाना था जिसको
वे हाय, गए कर गीले,
कैसे आंसू से भीगे साज सजाएं
क्या गाऊं जो मैं तेरे मन को भा जाऊं

पूछो! खोजो! तलाशो!!!

क्या गाऊं जो मैं तेरे मन को भा जाऊं
सौरभ के बोझे से अपनी
चाल समीरण साधे,
कुछ न कहो इस वक्त उसे,
वह स्वर्ग उठाए कांधे,
बंधी हुई मेरी कुछ सांसों
से भी मीठी सुधियां,
जो बीत चुकी क्या
उसकी याद दिलाऊं
क्या गाऊं जो मैं तेरे मन को भा जाऊं

छोड़ो अतीत को। जो बीता, बीता! अनबीते को तलाशो। जो हुआ, हुआ। अनहुए को तलाशो। और अनहुआ बड़ा है। हुआ तो बहुत क्षुद्र है। तुम जो रहे हो वह तो ना-कुछ है, तुम जो हो सकते हो वह सब कुछ है। तुम्हारा भविष्य विराट है। तुम अतीत के बोझ से अपने को दबा मत लो। तुम छोटी-छोटी बातों में मत पड़ जाओ।

लोग छोटे-छोटे अपराधों से दब गए हैं। पंडितों ने, पुरोहितों ने, संतों ने तुम्हें इतने अपराधों से भर दिया है कि तुम यह मान ही नहीं सकते कि मेरा और प्रभु से मिलन हो सकता है। तुमने यह स्वीकार ही कर लिया है कि तुम अंधेरे के कीड़े हो और अंधेरे में ही जीओगे, प्रकाश से तुम्हारा मिलन नहीं हो सकता। इसीलिए प्रकाश से मिलन नहीं हो रहा है। यह सबसे बड़ी दुर्घटना है जो मनुष्य के जीवन में घटी है।

अब चाहिए ऐसा धर्म जो लोगों को भरोसा दिलाए कि तुमने जो किया है, वह कुछ भी नहीं है। तुम्हारा होना तुम्हारे किए से अछूता है। तुम्हारे पाप और पुण्य सब सपने हैं। तुमने जो बुरा किया, भला किया, उसका कोई बड़ा मूल्य नहीं है।

तुम जो हो सकते हो, उसका मूल्य है। और तुम्हारे भीतर परम मूल्यवान बैठा है। तुम्हारा कोई कृत्य उसे दूषित नहीं कर पाया है।

कबीर ने कहा है : ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया।

मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हारी चादर भी वैसी की वैसी है। इसमें कुछ कबीर ने किया नहीं था कि जैसी की तैसी चदरिया रख दी। चदरिया मैली होती ही नहीं। यह चदरिया तुम्हारे भीतर जो है, ऐसी है, मैला होना इसका गुण नहीं। तुम कितनी ही अंधेरी रातों से गुजरे होओ, तुम्हारी चादर में अंधेरा नहीं चिपक जाता है। और तुम कितने ही नरकों से गुजर गए होओ, तुम्हारी चादर का स्वर्ग सदा सुरक्षित है।

तुम अतीत को देखते हो तो अपराध के भाव से दब जाते हो। भविष्य को देखो। संभावना को देखो। वास्तविक का कोई मूल्य नहीं है, जो हो सकता है उसे देखो। तब तुम्हारे भीतर उमंग उठेगी। वही उमंग भजन बनती है।

'भजन और सेवा।'

सेवा का क्या अर्थ है? शांडिल्य के सूत्रों पर जिन्होंने टीकाएं लिखी हैं, उन्होंने लिखा है—सेवा का अर्थ है : मंदिर में भगवान की जो मूर्ति है उसकी सेवा। यह झूठा अर्थ है। मूर्ति को सेवा की कोई जरूरत नहीं है। तुम नाहक समय खराब कर रहे हो। जीवित परमात्मा चारों तरफ मौजूद है, सेवा करनी हो इसकी करो।

> *जब तुम अपने बच्चे की सेवा कर रहे हो, अपनी पत्नी की, अपने पति की, अपने पिता की, अपनी मां की, अपने पड़ोसी की, अपनी गाय की, अपने घोड़े की, अपने पौधे की-तब तुम परमात्मा की सेवा कर रहे हो*

मैं तुमसे यह कहना चाहता हूं : जब तुम अपने बच्चे की सेवा कर रहे हो, अपनी पत्नी की, अपने पति की, अपने पिता की, अपनी मां की, अपने पड़ोसी की, अपनी गाय की, अपने घोड़े की, अपने पौधे की—तब तुम परमात्मा की सेवा कर रहे हो। मंदिर की मूर्ति ने तुम्हें खूब धोखा दे दिया। वह सस्ती सेवा है। और मंदिर की मूर्ति को तुम जानते हो कि पत्थर है; इसलिए सेवा भी कर आते हो और भीतर तुम जानते हो—पत्थर पत्थर है। इसे झुठलाओगे कैसे? इसलिए तुम्हारी सेवा कभी भी हार्दिक नहीं हो पाती।

जीवंत चारों तरफ मौजूद है, तुम कहां जा रहे? किस मस्जिद में? किस मूर्ति की तलाश कर रहे हो? परमात्मा तुम्हारे घर आया हुआ है और तुम मंदिर जा रहे हो? परमात्मा तुम्हारे बेटे में मौजूद है, तुम्हारी मां में, तुम्हारे पिता में, तुम्हारी पत्नी में। लेकिन नहीं, पत्नी, पिता, मां, बेटा—यह तो जंजाल है, यह तो माया है। यह बड़े मजे की बात है, यह माया है और वह पत्थर की मूर्ति जो मंदिर में रखी है, वह सत्य है! आदमी कैसे धोखे खड़े कर लेता है! जीवंत झूठा है और मुर्दा सच है! और वह मुर्दा भी इन्हीं जीवंतों ने बनाया है; किसी मूर्तिकार ने गढ़ा है; किसी पुजारी ने फूल चढ़ाए हैं। इन मुर्दों के द्वारा, इन झूठों के द्वारा बनाया गया परमात्मा सच हो गया है, और बनाने वाले झूठ हो गए हैं।

नहीं, मैं तुम्हें सेवा का वही अर्थ देना चाहता हूं जो शांडिल्य का रहा होगा। भजन करो, खोजो, गीत गाओ, पूछो कि मैं किस तरह गाऊं कि तुझे लुभा लू, कि तुझे भा जाऊं? नये नृत्य सीखो। नये ध्यान सीखो। और चारों तरफ जो परमात्मा मौजूद है, इसकी सेवा में लग जाओ।

— ओशो

अथातो भक्ति जिज्ञासा, दूसरा भाग,
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)